हरिद्वार में श्री हनुमान जयंती एवं मूर्ति प्राण–प्रतिष्ठा समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(06 अप्रैल 2023)

जय हिन्द!

श्री अवधूत मण्डल आश्रम में आयोजित **श्री हनुमान जयंती उत्सव** में उपस्थित भारत सरकार में राज्यमन्त्री **श्रीमान् श्रीपाद यशो नाईक जी**, पूज्य संत **स्वामी रामदेव जी,** श्रद्धेय **आचार्य बालकृष्ण जी**, **महन्त रघुमुनि जी, महामण्डलेश्वर डॉ. सन्तोषानन्द देव** जी एवं पूजनीय **समस्त सन्तगण** एवं **भक्तजन!**

आज हरिद्वार की इस पवित्र भूमि पर **आप सभी के बीच आकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।**

सबसे पहले मैं आज **श्री हनुमान जयंती के** पवित्र अवसर पर आप सभी को **हार्दिक बधाई** और **हार्दिक शुभकामनाएं** देता हूँ।

हम सब जानते ही हैं कि **श्री हनुमान जी सर्व सुलभ** और **सर्व प्रिय** लोक देवता हैं, वे भक्तों की मनोकामनाओं को पूरा करने वाले हैं, **बल, बुद्धि, विद्या, ज्ञान और गुण के सागर हैं।**

हम सब जानते हैं कि **श्री हनुमान जी बाबा हीरादास जी के सपने में आये थे,** और उसी सपने से प्रेरणा प्राप्त करके बाबा हीरादास जी ने इस अवधूत मण्डल आश्रम में श्री हनुमान जी के मन्दिर की प्राणप्रतिष्ठा की थी।

ऐसे परम तपस्वी श्री **बाबा हीरा दास** जी को भी मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ, उन्हे दिल की गहराईयों से **श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।**

श्री हनुमान का यह दिव्य मंदिर आज के समय में हम सबके लिए एक **पवित्र आस्था, श्रद्धा और दृढ़ विश्वास का केन्द्र बन गया है।**

मुझे अत्यन्त प्रसन्न्ता है कि बाबा हीरा दास जी की सेवा, साधना और उनके परोपकारी कार्यों को आज महामण्डलेश्वर **स्वामी सन्तोषानन्द देव** जी आगे बढ़ा रहे हैं।

मैं **स्वामी सन्तोषानन्द देव** जी को उनके सेवा कार्यों के लिए दिल की गहराई से प्रसंशा करता हूँ, **मैं श्री वाहे गुरूजी से असरदास करता हूँ कि** आपके ये **सेवा** और परोपकार **के कार्य** इसी प्रकार से निरंतर **आगे बढते रहें।**

आप अवधूत मण्डल आश्रम के माध्यम से **सेवा के** श्रेष्ठ कार्यों के **माध्यम से हमारी संस्कृति, हमारी परम्पराओं और आस्था को एक दिशा प्राप्त हो रही है।**

आज मुझे इस मंदिर में भगवान श्री गणेश जी, श्री कुबेर जी और अन्य देवी–देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा का अवसर प्राप्त हुआ है।

देवलोक मंदिर में स्थापित सभी देवी देवताओं के दर्शन और पूजन करते हुए मुझे अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई।

श्री गणेश जी ऋद्धि, सिद्धि सहित इस देवलोक में विराजमान हुए हैं, समृद्धि के देवता **श्री कुबेर जी** महाराज भी **यहां विराजमान हुए हैं।**

हमारे शास्त्रों में बताया गया है कि **श्री कुबेर जी का** भण्डार हिमालय में ही है, यहीं से ही वो सभी को धन और समृद्धि प्रदान करते हैं।

इसी प्रकार से **ऋद्धि–सिद्धि के स्वामी श्री गणेश जी** भी उत्तराखण्ड हिमालय के ही निवासी हैं, आप सब तो जानते ही हैं कि **वे कैलाशवासी भगवान शिव के पुत्र हैं।**

ऐसे लोक मंगल के देवता, लोक कल्याण के देवता, सुख–शांति समृद्धि के देवताओं की **मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा** का विचार **अत्यन्त प्रसंशनीय है।**

आज जब भारत के लोगों नें **विकसित भारत का संकल्प** लिया है, **समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का संकल्प** लिया है, **विश्वगुरू भारत का संकल्प** लिया है, ऐसे संकल्पों की पूर्ति भी हमें हमारे **ईश्वरीय आशीर्वाद से** संतों – महात्माओं की साधना, त्याग और तपस्या से **पूर्ण होने वाला है।**

आप सबके साथ यह बात साझा करते हुए मुझे अत्यन्त खुशी हो रही है कि जब **डेढ़ वर्ष पहले** मैं राज्यपाल के रूप में उत्तराखण्ड आया था, मैने राज्यपाल पद पर **शपथग्रहण की** तो **राजभवन में** कुछ कमी सी अनुभव हुई, और वह **कमी थी एक मंदिर की।**

मैंने महादेव से प्रार्थना की, और कुछ ही महीनों के अन्दर में राजभवन में एक मंदिर बन गया।

19 अप्रैल 2021 को उत्तराखण्ड के राजभवन में **महादेव की प्राण प्रतिष्ठा करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ,** राजभवन में जब भी आप आएं तो **राजप्रज्ञेश्वर महादेव**

मंदिर में स्थित **शिव परिवार** के दर्शन करने का भी वहां पर अवसर प्राप्त हो सकेगा।

राजभवन में मंदिर बनाने का मेरा संकल्प इस लिए पूरा हो सका क्योंकि **उत्तराखण्ड की यह धरती** अपने आप में **देवभूमि है,** यहां **कण कण में देवताओं का वास है,** यहां साक्षात ईश्वर का वास है, **हिमालय में भगवान शिव का वास है, बद्री–केदार–गंगोत्री–यमनोत्री जैसे दिव्य धाम हैं। पग–पग पर तीर्थ स्थान हैं, प्रकृति के हर एक रूप में एक दिव्य सौन्दर्य है, एक दिव्य चेतना है।**

ऐसी इस पवित्र **उत्तराखण्ड की धरती पर साधु–संत–ऋषि–मुनि जन आज भी साधना कर रहे हैं,** तपस्या कर रहे हैं, योग कर रहे हैं, **ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म और भारतीय संस्कृति की उपासना कर रहे हैं।**

आप सभी तो जानते ही हैं कि इस देवभूमि उत्तराखण्ड की पुण्य धरती पर वेदों की रचना हुई, पुराणों की रचना हुई, शास्त्रों की रचना हुई।

चारों वेद, अठ्ठारह पुराण, महाभारत की रचना उत्तराखण्ड हिमालय में ही हुई थी।

भगवान श्री वेदव्यास जी और श्री गणेश जी ने वेदों का लिखित रूप उपलब्ध कराया था।

आदि जगद्गुरू श्री शंराचार्य की परम्परा के चार पीठों और चार धामों में से एक पीठ और एक धाम इसी उत्तराखण्ड की धरती पर ही हैं।

सात मोक्ष पुरियों में उत्तराखण्ड की पवित्र श्री मायापुरी भी जिसे हम **हरिद्वार** के नाम से जानते हैं, उत्तराखण्ड में ही **है।**

हरिद्वार की यह मोक्षपुरी मायापुरी कुम्भनगरी, दक्ष प्रजापति की राजधानी शिव नगरी, भगवान विष्णु की धरती, साप्त ऋषियों की तपस्थली, भगवान शंकराचार्य की परम्परा की दशनामी सन्यासियों की भूमि, षडदर्शन साधु परम्परा की भूमि, गुरूनानक देव जी, श्री चन्द्र जी, निर्मला संत परम्परा की भूमि, महर्षि दयानन्द सरस्वती की वैदिक परम्परा की भूमि हरिद्वार ही है।

इसी लिए हम सब के लिए **हरिद्वार एक परम पावन और परम पवित्र तीर्थ बन गया है।** यह शिव और शक्ति की उपासना की भूमि है। भगवान विष्णु की पवित्र नगरी है।

सच कहूँ तो हरिद्वार की यह पवित्र धरती का कण–कण दिव्य और पावन है।

आज के समय में **बाबा रामदेव जी** हमारी उस ऋषि परम्परा को एक नये आयाम दे रहे हैं। **आचार्य बालकृष्ण जी** प्राचीन भारतीय विद्याओं को महानता के नये आयाम प्रदान कर रहे हैं।

पतंजलि योगपीठ तो आधुनिक भारत का एक नया तीर्थ ही बन गया है। जो **हमें कर्म और उपासना दोनों ही रास्तों पर आगे ले के जा रहा है।**

ऐसे परम पवित्र आध्यात्मिक नगरी हरिद्वार में **इस अवधूत मण्डल आश्रम में** श्री हनुमान जी की साधना के केन्द्र में संतो के बीच **आने के इस असवर को** मैं श्री महादेव जी **श्री हनुमान जी की कृपा ही मानता हूँ।**

आप सौभाग्यशाली हैं जो कि हरिद्वार और देवभूमि उत्तराखण्ड की यह पवित्र धरती पर इस पुण्य कार्य में सहभागी बने हैं।

कुछ दिनों बाद ही हमारे राज्य में चारधाम यात्रा प्रारम्भ होने जा रही हैं, मैं आप सभी को भी चारधाम यात्रा के लिए आमंत्रित करता हूँ, आप भी उत्तराखण्ड के मन्दिरों, तीर्थों, के दर्शन करके यहां की दिव्यता, पवित्रता का अनुभव करें।

और अन्त में श्री हनुमान जयंती के पवित्र अवसर पर एक बार फिर से यहां उपस्थित **आप सभी वन्दनीय सन्तों को नमन करता हूं, सभी भक्त जनों को बहुत – बहुत शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ।**

जय हिन्द!